International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बिहार के आर्थिक विकास में कृषि रोड मैप की भूमिका: एक अध्ययन

दीपक कुमार राणा

सहायक प्राध्यापक ,अर्थशास्त्र ,टी.पी. कॉलेज,मधेपुरा

सारांश

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है |कृषि ही अधिकतर लोगों की जीविका तथा छोटे –बड़े उधोगों का आधार है| कृषि में ही बिहार का विकास निहित है इसलिए सरकार ने 2008 से कृषि रोड माप के माध्यम से विकास का मार्ग प्रशस्त करने का एक सफल प्रयास किया है |इसके माध्यम से बिहार का सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था सतत सशक्त एवं गतिशील हो रहा है | शोध पत्र में कृषि रोड मैप के उदेश्यों,और उपलब्धियों का अध्ययन किया गया है |द्वितीय आंकड़ो पर आधारित यह शोध अध्ययन उपलब्धियों के साथ साथ चुनौतियां पर भी प्रकाश डालता है |

मुख्य शब्द – कृषि रोड मैप , विकास , उद्देश्य ,उपलब्धि

प्रस्तावना

बिहार से 2000 में झारखण्ड के अलग हो जाने के बाद बिहार से खनिज, उद्योग तथा विद्युत उत्पादन इकाइयों के अलग हो जाने के बाद बिहार मुख्यत: कृषि प्रधान प्रदेश बन गया । बिहार की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित हो गयी| अब कृषि के विकास से ही बिहार का विकास संभव है| इसलिए सरकार ने कृषि के विकास के लिए कई योजनाएं बनाई हैं जिनमें कृषि रोडमैप सबसे प्रमुख है। राज्य में कृषि विकास के सभी संभावनाए मौजूद है |भूमि उर्वर है |वर्तमान में बिहार देश का सबसे समृद्ध जल संसाधन वाला क्षेत्र है।यहाँ के किसान मेहनती हैं|बिहार पहली हरित क्रांति से अछूता रहा लेकिन द्वितीये हरित क्रांति का सूत्रधार बन सकता है | बिहार के लगभग 93.60 लाख हेक्टेयर भूमि में 79.46 लाख हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य है। यहां 76 प्रतिशत लोग आजीविका के लिए कृषि पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कृषि का 18प्रतिशत योगदान है। किसानों की आय बढ़ाने और फसलों की उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि के लिए सरकार ने कई सकारात्मक कदम उठाए हैं ताकि कृषि की दिशा एवं दशा में सुधार हो और बिहार का विकास तेजी से हो सके |अब तक तीन कृषि रोड माप पूर्ण हो चुके हैं|चौथी कृषि रोड मैप अप्रैल 2023 से शुरु होगी |सभी कृषि रोड मैप का उदेश्य अलग अलग रहा परन्तु अंतिम उदेश्य इसके माध्यम से बिहार का सम्पूर्ण विकास हो |

साहित्य समीक्षा

गरिमा नैन(2020)- अपने आलेख ‘ bihar krishi road map’ में तीन कृषि रोड मैप के उद्देश्यों के अध्ययन किया है | इसमें सरकार के द्वारा उठाये गए कदमों के चर्चा की है |

अध्ययन का उद्देश्य- 1) कृषि रोड मैप के उद्देश्य का अध्ययन
2) कृषि रोड मैप के उपलब्धियों का अध्ययन
3)आर्थिक विकासमें कृषि क्षेत्र के योगदान का अध्ययन

परिकल्पना – 1) सरकार कृषि को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनायें चला रही है |
2) कृषि रोड मैप के लागू होने से कृषि क्षेत्र के विकास में सहायता मिली है|

अध्ययन क्षेत्र – अध्ययन का क्षेत्र बिहार का कृषि क्षेत्र है |

शोध प्राविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वितीयक समंको पर आधारित वर्णात्मक प्रकृति की है| ये समंक बिहार सरकार के कृषि विभाग ,समाचार –पत्र,शोध आलेख से संकलित किया गया है |

शोध का आवश्यकता एवं महत्व

इस अध्ययन से यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि कृषि रोड मैप एक बिहार के आर्थिक विकास में क्या योगदान है | इस कार्यक्रम को किस प्रकार प्रभावी बनाया जा सकता है |

अध्ययन का विश्लेषण

बिहार सरकार ने राज्य के आर्थिक विकास के लिए कृषि को महत्वपूर्ण मानते हुए एक योजना बना कार्य करने का निर्णय लिया |अभी तक तीन कृषि रोड मैप समाप्त हो चुकी है |

पहला कृषि रोड मैप - 2008 में पहला कृषि रोड मैप की शुरुआत: की गयी |इसके लिए 17 फरवरी 2008 को किसान पंचायत का आयोजन किया गया था| यह 2012 तक चली |

प्रथम कृषि रोड मैप का मुख्य उद्देश्य

1) फसलों की उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाना
2) किसानों की आमदनी बढ़ाना |

लक्ष्य प्राप्ति हेतु उठाये गए कदम -इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीज के उत्पादन में वृद्धि और कृषि में आधुनिक उपकरणों के प्रयोग को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया |बिहार राज्य बीज निगम को पुनर्जीवित किया गया| निगम द्वारा 2010-11 में 210350 किवंटल प्रमाणित बीज का उत्पादन किया गया| साथ ही साथ इतनी क्षमता के गोदाम का भी निर्माण निगम द्वारा किया गया |मुख्यमंत्री तीव्र बीज विस्तार कार्यक्रम के तहत 50 प्रतिशत अनुदानित दर पर बीज उपलब्ध कराया गया |राज्य के 16 जिलों में मिट्टी जाँच प्रयोगशाला की स्थापना की गयी | कृषि यंत्रों एवं उपकरणों को अनुदानित दर पर दिया जा रहा है |सरकार ने कृषि विकास योजनाओं के योजना आकर में बढ़ोतरी की|

प्रथम कृषि रोड मैप के उपलब्धियां –

बीज प्रतिस्थापन अनुपात एक नई ऊंचाई पर पहुंचा |कुछ फसलों में तो यह 83% तक पहुंच गया| बिहार में अनाजों का उत्पादन रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच गया |2012-13 में अनाजों का कुल उत्पादन 178 . 9 लाख टन हो गया |इस अभियान के दौरान प्रति हेक्टेयर उत्पादन में भी रिकॉर्ड उत्पादन हुआ |धान की 224 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और आलू के 729 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन से विश्व रिकार्ड कायम हुआ |खाद्यान के साथ साथ बागवानी,मत्स्य ,डेयरी आदि कृषि सम्बन्ध क्षेत्र में भी उल्लेखनीयप्रगति हुई |

दूसरा कृषि रोड मैप -

बिहार में इंद्रधनुष क्रांति की शुरुआत करने एवं दूसरा कृषि रोडमैप शुरु करने के उद्देश्य से 2011 सरकार ने विभिन मुख्य विभागों को शामिल कर कृषि कैबिनेट का गठन किया था. | दूसरा कृषि रोडमैप की अवधि 2012 -2017 तक रखी गयी |साथ ही साथ 2022 तक के लिए सांकेतिक लक्ष्य भी तय किये गए|

इस कृषि रोड मैप के मुख्य उद्देश्य -

1)खाद्य एवं पोषण सुरक्षा.

2)रोजगार का सृजन और मजदूरों के पलायन पर रोक .

3)कृषि विकास का समावेशी मानवीय आधार तथा महिलाओं की व्यापक भागेदारी |

4)प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण और सतत उपयोग|

लक्ष्य प्राप्ति हेतु उठाये गए कदम-

किसानों को पर्याप्त मात्र में बिजली की आपूर्ति की गयी|भण्डारण की सुबिधा को बढाने के लिए नये गोदाम बनाए गये | किसानों की फसल बर्बाद न हो और उचित दाम मिले | इसके लिए खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को प्रोत्साहन देने का काम सरकार ने किया |खेत से बाजार तक किसान अपने फसलों को सुगमतापूर्वक ला सके इसके लिए ग्रामीण सड़कों की निर्माण पर जोर दिया गया| प्राकृतिक संसाधन के संरक्षण के लिए हरित मिशन के तहत वनों के क्षेत्रफल को 9 प्रतिशत से बढ़ा कर 15 प्रतिशत करने का प्रयास किया गया |सरकार ने अनुसंधान एवं उत्पादन के आधुनिक तकनीक को प्रोत्साहन देने के लिए कृषि महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की स्थापना की|

उपलब्धियां-

दूसरी कृषि रोड मैप के अंत तक खाद्यान्न उत्पादन में लगातार वृद्धि हुई |इसके साथ तिलहन, फल, सब्जियों के भी उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है |पशुपालन, दुग्ध उत्पादन एवं मछली पालन क्षेत्र एक सकारात्मक दिशा की ओर बढ़ा| बिहार को दूसरे कृषि रोड मैप में कई पुरस्कार भी मिले| 2012 में चावल उत्पादन के लिए कृषि कर्मण पुरस्कार मिला तो 2013 में गेहूं उत्पादन के क्षेत्र में कृषि कर्मण पुरस्कार प्राप्त हुआ| वहीं2015-16 एवं 2016-17 में मक्का के उत्पादन के क्षेत्र उत्पादन में कृषि कर्मण पुरस्कार मिला|बिहार चावल ,गेंहूँ ,मक्का आदि के उत्पादन में भारत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखने लगा |कृषि में विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की अभूतपूर्व क्षमता विकसित हुई |

तीसरा कृषि रोड मैप—

तीसरा कृषि रोडमैप 2017 में लागू किया गया. तीसरे कृषि रोडमैप में सरकार ने प्रमुख रूप से सात लक्ष्य है जिसे कृषि कबिनेट के प्रमुख विभागों के सहयोग से हासिल किया जायेगा –

. जैविक खेती के जरिए उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने पर जोर

.प्रत्येक भारतीय थाली में कम से कम एक बिहारी व्यंजन

.खाद्य सुरक्षा

.नई तकनीक के जरिए पोषण वाली पैदावार

. लागत कम उपलब्धि ज्यादा के साथ कृषि बाजार का विकास

.रासायनिक खाद के बदले वर्मी कंपोस्ट के लिए प्रोत्साहन

.मिट्टी के स्वास्थ्य कार्ड के जरिए खेतों की नियमित सेहत जांच

.मछली- पशुपालन के जरिए किसानों का समावेशी विकास।

तीसरे कृषि रोडमैप-2018-22 को एक वर्ष का विस्तार कोरोना के कारण लगे लाकडाउन की वजह से दिया गया |यह मार्च 2023 तक चलायी

लक्ष्य प्राप्ति हेतु उठाये गए कदम-

पहली बार कृषि रोड मैप में गंगा की अविरलता एवं निर्मलता के लिए अभियान को शामिल किया गया है। पटना से भागलपुर तक गंगा एवम राजकीय और राष्ट्रीय सड़कों के किनारे जैविक कृषि कॉरिडोर का विकास किया जाएगा। हरित आवरण की सीमा वर्ष 2022 तक 15 प्रतिशत से बढ़ाकर17 प्रतिशत करने का लक्ष्य है| किसानों को खेतों तक बिजली पहुंचाने के लिए अलग से 1500 मेगा वाट का फीडर की व्यवस्था की गई. मत्स्य और दुग्ध उत्पादन पर भी जोर दिया गया. इसके अलावा बाढ़ और सूखा वाले क्षेत्रों में वैकल्पिक फसलों पर भी जोर दिया गया| सरकार ने हर खेत तक पानी पहुंचाने का लक्ष्य रखा है | करीब ढाई लाख से अधिक किसानों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है. स्वयं सहायता समूह का गठन कराया |जीविका दीदी नामकरण से महिलायों का समूह का गठन किया गया |जीविका दीदियां कृषि, पशुपालन सहित अन्य जीविकोपार्जन के कार्य बेहतर ढंग से कर रही हैं। महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही हैं| साथ ही जलवायु अनुकूल चयनित गांव को बीज हब के रूप में विकसित किया जाएगा. अब तक जलवायु अनुकूल कृषि के लिए करीब 190 गांव को फसल विविधीकरण में बढ़ावा मिला है. फसल विविधीकरण के अंतर्गत धान, गेहूं के साथ-साथ मक्का, दलहन, तिलहन,फल, सब्जी एवं फूल,औषधीय खेती पर विशेष जोर रहेगा. जलवायु अनुकूल कृषि अंतर्गत फसल चक्र के लिए बाजार, मंडुआ, कोदो और मोटे अनाज की खेती का विस्तार होगा.किसानों को छोटी छोटी जरुरत पूरा करने की लिए कर्ज लेना पड़ता है| संस्थागत कर्ज अग्रिम के रूप में देने की लिए सरकार ने 6000 करोड़ रुपया खर्च करने का प्रावधान किया है| सरकार ने किसानों को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ प्रशिक्षण पर जोर दिया है| तीसरा कृषि रोड की अवधि 2017 - 2022 तक तय की गई इसके लिए सरकार ने 1.54 लाख करोड़ रुपए का प्रावधान किया है |

उपलब्धियों---

इस दौरान धान अधिप्राप्ति का भी रिकॉर्ड बना |बिहार आज चावल और गेहूं के उत्पादन में देश में छठे स्थान पर है. मक्का के उत्पादन में दूसरे स्थान पर है. सब्जी के उत्पादन में तीसरे स्थान पर है. शहद के उत्पादन में दूसरे स्थान पर है. लीची के उत्पादन में प्रथम स्थान, आम के उत्पादन में चौथे स्थान, अमरूद के उत्पादन में 5वें स्थान और केला के उत्पादन में छठे स्थान पर है. । मखाना में देश के कुल उत्पादन का 85 से अधिक का उत्पादन करके राज्य देश में पहले स्थान पर हैं। आज बिहार का हरित पट्टी 15% पहुंच गया है|

बिहार में मक्का का उत्पादन 2007-08 में प्रति हेक्टेयर 27.39 क्विंटल से बढ़कर 2021-22 में 52.36 क्विंटल हो गया है। गेहूं का उत्पादन 2007-08 में प्रति हेक्टेयर 23.25 क्विंटल से बढ़कर2021-22 में 30. 78 क्विंटल हो गया है। इसी तरह धान का उत्पादन2007-08 में प्रति हेक्टेयर 12.37 क्विंटल से बढ़कर 2021-22 में 24.96 क्विंटल हो गया है। बिहार में दूध, सब्जी और मछली का उत्पादन भी काफी बढ़ा है। बिहार में पहले सिर्फ 2.88 लाख मीट्रिक टन मत्स्य उत्पादन होता था । आज मछली का दूसरे राज्यों से आयात काफी कम गया है|कृषि रोड मैप के क्रियान्वयन के पश्चात् राज्य का वर्तमान मत्स्य उत्पादन 7.62 लाख मीट्रिक टन हो गया है।

2019-20 में अनाज का उत्पादन 163.80 लाख टन था, जो 2020-21 में बढ़कर 179.52 लाख टन हो गया और 2021-22 में राज्य में खाद्य उत्पादन 184.87 लाख टन रहा|

चौथे रोड मैप-:

चौथा कृषि रोड मैप 2023- 2028 तक के लिए बनाया जा रहा है. सरकार के लिए कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के साथ अधिक उत्पादन वाले क्षेत्रों का निर्यात राज्य और देश से बाहर हो यह एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि नीतीश कुमार ने कृषि के क्षेत्र में बड़ा लक्ष्य तय किया था कि बिहार का एक व्यंजन हर भारतीय के थाली में पहुंचे |

चौथा कृषि रोड मैप के संभावित लक्ष्य-

-जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए क्षेत्र विस्तार के साथ-साथ जैविक उत्पादन के लिए विशिष्ट बाजार की स्थापना की जाएगी.

- राज्य को बीज में आत्मनिर्भर बनाने के साथ कृषि शोध पर जोर

-नई नर्सरी नीति के साथ डिजिटल कृषि को बढ़ावा
-बागवानी फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने पर ध्यान देगी.
- प्रस्तावित कृषि रोडमैप में डीजल की बजाए बिजलीचालित पंप सेट पर विशेष जोर

चुनौतियां - तीन कृषि रोड माप समाप्त हो चुके हैं| अनेक उपलब्धियाँ की प्राप्ति के बाद भी कृषि के सम्पूर्ण विकास के लिए कई चुनौतियां हैं |किसानों की आय बढ़ाना, तेलहन-दलहन का उत्पादन बढ़ाना और मौसम के अनुकूल कृषि करना सबसे बड़ी चुनौती है| साथ ही किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य दिलाना, गुणवत्ता युक्त बीज का उत्पादन, मत्स्य-दुग्ध के क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाना भी महत्वपूर्ण चुनौती है | एक करोड़ 61 लाख जोतों में 91% छोटे तथा मझोले किसान हैं, जिनके पास कृषि उत्पादन के लिये आधारभूत संरचना का अभाव है। बिहार में मंडी तथा बाजार समितियों की कोई व्यवस्था नहीं है|किसान बिचौलियों के चंगुल में हैं।। डेयरी, मत्स्य पालन, सब्जियों, फलों के उत्पादन की दिशा में प्रयास अपर्याप्त हैं। कृषि वित्त एवं फसल बीमा की पहुँच सभी किसानों तक नहीं है| कृषि के पिछड़े तथा लाभकारी नहीं होने के चलते मजदूरों का पलायन जारी है |

निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कृषि रोड माप बिहार के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है |इससे उत्पादन के साथ साथ उत्पादकता में भी वृद्धि हुई है| धान और आलू में विश्व रिकॉर्ड भी बना | अच्छे गुणवत्ता वाले बीजों , आधुनिक कृषि उपकरण ,जैविक कृषि ,भंडारण क्षमता एवं आधारभूत संरचना आदि में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है | इससे कृषि व्यवसाय, रोजगार के अवसर एवं जीवन स्तर बढ़ रहा है |भविष्य के चुनौतियों के प्रति सरकार सजग है एवं किसानों को जागरूक जैविक और मौसम आधारित कृषि को बढ़ावा देकर कर रही है | इससे बिहार के आर्थिक विकास को समावेशी एवं सतत बनाये रखेगी |

सुझाव

1) कृषकों की शिक्षा एवं उनके तकनीकि ज्ञान की वृद्धि आवश्यक है ताकि वे उत्कृष्ट बीजों, खाद्य एवं तकनीक का प्रयोग कर सकें। साथ ही साथ सरकारी योजनाओं का लाभ ले सके|
2). राज्य में ही बेहतर गुणवत्ता वाले बीज,जैविक खाद एवं कीटनाशक का विकास कराएं ताकि उत्पादन लागत कम हो| साथ ही फसल अवशेष प्रबंधन वाले यंत्रों का निर्माण भी करें और किसानों को सब्सिडी पर उपलब्ध हो|
3) जलवायु अनुकूल कृषि एवं जैविक खेती के साथ कृषि विविधिकरण के लिए बेहतर क्रियान्वयन की जरुरत है |
4) किसानों को कृषि एवं कृषि उत्पादों से संबंधित प्रशिक्षण एवं जानकारी उपलब्ध कराएं |उत्पादों की मार्केटिंग को बढ़ावा देने के साथ-साथ राज्य के उत्पादों की ब्रांडिंग तथा कृषि बाजार के विकास को लेकर योजनाबद्ध ढंग से काम करें|
5) कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए सामजिक सुरक्षा का दायरा बढ़ाना चाहिए |संभव हो तो रोजगार योजनाओं को कृषि से सम्बद्ध करना बेहतर होगा| इससे मजदूरोंका पलायन रुक सकता है |

संदर्भ सूचि

1. वेबसाईट कृषि विभाग,बिहार सरकार
2. कृषि रोड मैप 2012-17 पुस्तिका
3. https://csejuction.com.bihar krishi roadmap
4. www.jagran .com
5. https://www.ncaer.org.bihar krishi roadmap

6. www.prabhatkhabar.com
7. गरिमा नैन(2020)- bihar krishi road map
8. https://www.agrobihar.com/index.html